पंच कैलाश

कथा किन्नौर कैलाश की

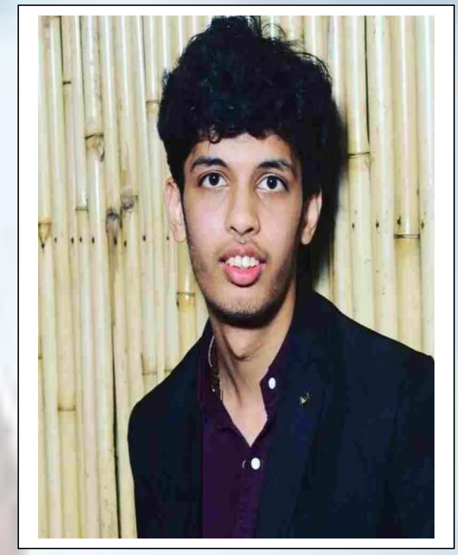


By :- ध्रुव गुप्ता जी

किन्नौर कैलाश कथा

लेखक

{ ध्रुव गुप्ता जी }



श्री ध्रुव गुप्ता "महाकाल टूर एंड ट्रैवेल्स" नामक प्रसिद्ध कंपनी के मालिक हैं। उनके पास ट्रैवल एजेंसी में 15 साल का अनुभव है। उन्होंने अपने यात्रा कार्यक्रम में 200 से अधिक हिंदू मंदिरों और तीर्थों की यात्रा की थी। अब वह पुस्तकों की एक शृंखला लिख रहे हैं जिसमें प्रसिद्ध हिंदू मंदिरों और मार्गों का विवरण है। यह पुस्तक उस श्रृंखला में से एक है। यह किताब किन्नौर कैलाश के बारे में है। किन्नौर कैलाश पंच कैलाशों की श्रृंखला में एक है। इसे भगवान शिव का "शीतकालीन आसन" भी कहा जाता है।

वह स्थान जहां यह स्थित है

किन्नौर कैलाश, हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले में स्थित एक पवित्र पर्वत शृंखला है, जिसे भगवान शिव का निवास स्थान माना जाता है। यह पर्वत समुद्र तल से लगभग 6050 मीटर (19,850 फीट) की ऊँचाई पर स्थित है और हिमालय की सबसे कठिन और रहस्यमयी पर्वत चोटियों में से एक है।

भौगोलिक स्थिति और सीमा

किन्नौर कैलाश हिमाचल प्रदेश के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित है और यह भारत-तिब्बत सीमा के पास आता है। इसकी सीमा उत्तर में तिब्बत, पश्चिम में कुल्लू और मंडी जिले, दक्षिण में

शिमला जिला और पूर्व में उत्तराखंड से मिलती है। इस क्षेत्र की भौगोलिक बनावट अत्यंत दुर्गम है और यहाँ कई ऊँची पर्वत चोटियाँ, गहरी घाटियाँ और ग्लेशियर मौजूद हैं।

किन्नौर जिले का परिचय

किन्नौर जिला, हिमाचल प्रदेश के बारह जिलों में से एक है और अपनी प्राकृतिक सुंदरता, ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं, हरे-भरे जंगलों और नदियों के लिए प्रसिद्ध है। यह जिला सतलुज नदी के किनारे बसा हुआ है, जो तिब्बत से निकलकर भारत में प्रवेश करती है।

किन्नौर कैलाश पर्वत शृंखला इसी जिले में आती है और इसे स्थानीय लोग अत्यंत पवित्र मानते हैं। यहाँ की संस्कृति में हिंदू और बौद्ध धर्म का प्रभाव देखने को मिलता है, और कई प्राचीन मंदिर एवं बौद्ध मठ इस क्षेत्र की धार्मिक महत्ता को दर्शाते हैं।

किन्नौर कैलाश का इतिहास

हिंदू ग्रंथों में किन्नौर कैलाश को भगवान शिव और माता पार्वती का दिव्य निवास स्थान बताया गया है। यह पर्वत श्रृंखला समुद्र तल से लगभग 6050 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है और यहाँ 79 फीट ऊँचा एक विशाल शिवलिंग है, जिसे 'कैलाश शिला' या 'फरशिला' कहा जाता है। मान्यता है कि यह शिवलिंग ऋतु के अनुसार अपना रंग बदलता है, जिससे इसे रहस्यमयी और दिव्य स्थान माना जाता है।





पौराणिक कथाओं के अनुसार, किन्नौर कैलाश वह स्थान है जहाँ भगवान शिव ने देवताओं और असुरों के बीच युद्ध के दौरान विश्राम किया था। ऐसा भी माना जाता है कि यहाँ शिवजी ने अपने गणों के साथ कई वर्षों तक तपस्या की थी।

अन्य संबंधित कथाएँ

महाभारत और किन्नौर कैलाश

महाभारत के अनुसार, किन्नौर क्षेत्र को प्राचीन काल में "किन्नर देश" कहा जाता था। यहाँ किन्नर जाति निवास करती थी, जिन्हें देवताओं का संगीतकार कहा जाता है। कहा जाता है कि पांडवों ने अपने वनवास के दौरान इस क्षेत्र में समय बिताया था और भगवान शिव की आराधना की थी।

एक अन्य कथा के अनुसार, जब पांडव अपने अंतिम यात्रा मार्ग पर थे, तो उन्होंने किन्नौर कैलाश की यात्रा की थी। इस पर्वत को स्वर्ग का द्वार भी कहा जाता है, क्योंकि यहाँ से होकर आत्माएँ मोक्ष प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ती हैं।

स्थानीय जनजातियों और लोक कथाएँ

किन्नौर क्षेत्र में निवास करने वाली जनजातियाँ इस पर्वत को अत्यंत पवित्र मानती हैं। उनकी लोक कथाओं में कहा गया है कि भगवान शिव यहाँ कभी-कभी दर्शन देते हैं। स्थानीय लोगों का विश्वास है कि इस पर्वत की यात्रा करने वाले को शिवजी का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

एक प्रसिद्ध लोककथा के अनुसार, एक समय यहाँ एक दानव का आतंक था, जिसने लोगों को परेशान कर रखा था। भगवान शिव ने इस स्थान पर आकर दानव का वध किया और इसी कारण यह पर्वत एक पवित्र शक्ति स्थल बन गया।

बौद्ध धर्म और किन्नौर कैलाश

किन्नौर क्षेत्र में बौद्ध धर्म और हिंदू धर्म दोनों का प्रभाव देखने को मिलता है। बौद्ध अनुयायी इस पर्वत को भगवान बुद्ध के अवतार वज्रधर का निवास स्थान मानते हैं। कई बौद्ध भिक्षु यहाँ ध्यान और साधना के लिए आते हैं।

किन्नौर में बौद्ध संस्कृति और हिंदू धर्म का अनूठा संगम देखने को मिलता है। यहाँ के मंदिरों और मठों में शिव तथा बुद्ध, दोनों की मूर्तियाँ स्थापित हैं, जो इस स्थान की धार्मिक विविधता को दर्शाती हैं।

किन्नौर कैलाश यात्रा का ऐतिहासिक महत्व

किन्नौर कैलाश की यात्रा को अत्यंत कठिन और चुनौतीपूर्ण माना जाता है। यह यात्रा वर्षों से हिंदू और बौद्ध श्रद्धालुओं द्वारा की जाती रही है। इस यात्रा का उल्लेख कई प्राचीन ग्रंथों और ऐतिहासिक दस्तावेजों में मिलता है।

प्राचीन समय में यह यात्रा केवल स्थानीय संतों और साधुओं के लिए ही संभव थी, लेकिन समय के साथ इसकी लोकप्रियता बढ़ी और अब हर साल हजारों श्रद्धालु यहाँ यात्रा करने आते हैं।

ब्रिटिश काल और आधुनिक इतिहास

ब्रिटिश शासन के दौरान, किन्नौर क्षेत्र को एक दुर्गम और रहस्यमयी स्थान माना जाता था। ब्रिटिश अधिकारियों ने इस क्षेत्र में कुछ शोध कार्य किए, लेकिन किन्नौर कैलाश पर्वत के धार्मिक महत्व के कारण यहाँ बाहरी हस्तक्षेप कम ही हुआ।

स्वतंत्रता के बाद, भारत सरकार ने इस क्षेत्र को धार्मिक पर्यटन के लिए बढ़ावा देना शुरू किया। समय के साथ, किन्नौर कैलाश यात्रा को एक धार्मिक और साहसिक यात्रा के रूप में मान्यता प्राप्त हुई।

वर्तमान समय में किन्नौर कैलाश का महत्व

आज किन्नौर कैलाश केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि पर्यटकों और पर्वतारोहियों के लिए भी एक आकर्षण का केंद्र बन गया है। हर साल, सैकड़ों श्रद्धालु और साहसिक प्रेमी इस पर्वत की यात्रा करते हैं।



किन्नौर कैलाश यात्रा को अत्यंत कठिन माना जाता है, क्योंकि इसमें दुर्गम पहाड़ियों, बर्फीले रास्तों और कठिन जलवायु परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। फिर भी, शिवभक्त और साहसिक प्रेमी इस यात्रा को श्रद्धा और समर्पण के साथ पूरी करते हैं।

यात्रा का विवरण

यात्रा के लिए परिवहन और रूट

(i) सड़क मार्ग:

शिमला → रिकांग पियो → ठांगलिंग गाँव

दिल्ली और चंडीगढ़ से शिमला के लिए नियमित बस और टैक्सी सेवा उपलब्ध है।

(ii) रेल मार्ग:

सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन कालका रेलवे स्टेशन है।

कालका से शिमला के लिए ट्रेन और फिर सड़क मार्ग से यात्रा करनी होती है।

(iii) हवाई मार्ग:

सबसे नजदीकी हवाई अड्डा शिमला एयरपोर्ट है।

शिमला से सड़क मार्ग द्वारा ठांगलिंग पहुँचा जा सकता है

यात्रा का मार्ग और प्रमुख पड़ाव

किन्नौर कैलाश यात्रा लगभग 60 किलोमीटर की कठिन ट्रैकिंग होती है, जिसमें ऊँची पहाड़ियों, बर्फीले रास्तों और गहरी घाटियों से होकर गुजरना पड़ता है। यात्रा मुख्य रूप से तीन चरणों में विभाजित की जाती है:

(i) ठांगलिंग गाँव (आरंभ बिंदु)

यह किन्नौर कैलाश यात्रा का पहला पड़ाव है, जो समुद्र तल से 2700 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।

यहाँ से आगे की यात्रा पैदल करनी होती है।

(ii) गुनासंग

यह स्थान समुद्र तल से 3900 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।

यह स्थान विश्राम के लिए आदर्श माना जाता है, क्योंकि आगे की यात्रा अत्यधिक कठिन होती है।

(iii) पार्वती कुंड

यह पवित्र झील समुद्र तल से 4500 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।

श्रद्धालु यहाँ स्नान करके पुण्य अर्जित करते हैं।

(iv) किन्नर कैलाश शिवलिंग

यात्रा का अंतिम और सबसे कठिन चरण, जहाँ 6050 मीटर की ऊँचाई पर स्थित शिवलिंग के दर्शन होते हैं।

यह शिवलिंग ऋतु के अनुसार रंग बदलता है और अत्यंत अद्भुत दिखाई देता है।

यात्रा की अवधि और कठिनाई स्तर

कुल दूरी: लगभग 60 किमी (आना-जाना मिलाकर)

समय: 3 से 5 दिन

यात्रा की कठिनाई: अत्यधिक कठिन (सिर्फ अनुभवी ट्रैकर्स और स्वस्थ श्रद्धालुओं के लिए)

सर्वोत्तम समय: जुलाई से सितंबर (मानसून के बाद यात्रा करना सुरक्षित होता है)

यात्रा का अनुभव

किन्नौर कैलाश यात्रा किसी भी श्रद्धालु या साहसिक यात्री के लिए एक अविस्मरणीय और चुनौतीपूर्ण अनुभव होता है। यह यात्रा न केवल आध्यात्मिकता से भरपूर है, बल्कि कठिन रास्तों, ऊँचाई पर बदलते मौसम और हिमालयी सौंदर्य का एक अनूठा संगम भी है। यहाँ मैं इस यात्रा के अपने अनुभव को साझा कर रहा हूँ।

यात्रा की तैयारी और पहली झलक

किन्नौर कैलाश यात्रा के लिए मानसिक और शारीरिक रूप से तैयार रहना बहुत जरूरी होता है। चूँकि यह यात्रा अत्यधिक कठिन है, इसलिए हमने पहले से ही कुछ हफ्तों तक ट्रैकिंग और व्यायाम किया। गर्म कपड़े, आवश्यक दवाइयाँ, ट्रैकिंग शूज और टॉर्च जैसी चीज़ें साथ रखी गईं। हमारी यात्रा शिमला से रिकांग पिओ और फिर ठांगलिंग गाँव से शुरू हुई। जैसे ही हमने किन्नौर

की ओर बढ़ना शुरू किया, पहाड़ों की ऊँचाई और प्राकृतिक सुंदरता ने मन मोह लिया। ठांगलिंग से आगे की यात्रा पैदल शुरू हुई, जो कि रोमांच से भरी थी।

कठिन रास्ते और रोमांचक चुनौती

यात्रा के दौरान सबसे पहले हमें गुनासंग पहुँचना था, जो लगभग 3900 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ तक का रास्ता जंगलों और खड़ी चढ़ाई से भरा था, लेकिन आसपास की हरियाली और पहाड़ों से बहने वाली ठंडी हवा ने थकान को कुछ हद तक कम कर दिया।

गुनासंग के बाद यात्रा और कठिन हो गई। रास्ते में कहीं-कहीं ग्लेशियर भी थे, जिससे चलना मुश्किल हो रहा था। ऑक्सीजन की कमी महसूस होने लगी, लेकिन शिव भक्ति और आस्था ने हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

पार्वती कुंड – आस्था और शांति का संगम

लगभग 6-7 घंटे की कठिन चढ़ाई के बाद हम पार्वती कुंड पहुँचे, जो 4500 मीटर की ऊँचाई पर स्थित एक पवित्र झील है। इस झील को माता पार्वती का स्थान माना जाता है, और श्रद्धालु यहाँ स्नान करके पवित्रता का अनुभव करते हैं।

झील का पानी अत्यंत ठंडा था, लेकिन हमने आस्था के साथ उसमें स्नान किया। इस स्थान पर ध्यान लगाने से असीम शांति का अनुभव हुआ। चारों ओर फैले पर्वत और बर्फ की सफेदी ने वातावरण को और दिव्य बना दिया था।

अंतिम चढ़ाई और शिवलिंग के दर्शन

पार्वती कुंड से आगे का रास्ता सबसे कठिन था। ऑक्सीजन की कमी, तीखी चढ़ाई और ठंडी हवाओं के कारण यात्रा और चुनौतीपूर्ण हो गई थी। हालाँकि, जब हम किन्नौर कैलाश शिवलिंग (6050 मीटर ऊँचाई) के पास पहुँचे, तो सारी थकान और कष्ट भूल गए।

79 फीट ऊँचा शिवलिंग हमारे सामने था, जो प्राकृतिक रूप से बना हुआ एक विशाल पत्थर

है। यह शिवलिंग अलग-अलग समय पर अपना रंग बदलता है, और हमें यह हल्के लाल रंग में दिखाई दिया। उस समय ऐसा महसूस हुआ जैसे हम किसी दूसरी दुनिया में आ गए हों।
शिवलिंग के दर्शन कर हमने वहीं बैठकर ध्यान लगाया और मंत्र जाप किया। यह क्षण जीवन का सबसे यादगार क्षण था। वहाँ की शांति और दिव्यता को शब्दों में बयाँ करना कठिन है।

वापसी का मार्ग – एक नई ऊर्जा के साथ

किन्नौर कैलाश के दर्शन के बाद वापसी का रास्ता भी आसान नहीं था, लेकिन शिव कृपा से अब हमें कम कठिनाई महसूस हो रही थी।
वापसी के दौरान हिमालय की प्राकृतिक सुंदरता और भी अद्भुत लग रही थी।
जब हम वापस ठांगलिंग पहुँचे, तो एक अलग ही अनुभूति थी। ऐसा लग रहा था कि इस यात्रा ने हमारे भीतर कोई नई ऊर्जा भर दी हो। यह सिर्फ एक ट्रैकिंग यात्रा नहीं थी, बल्कि आत्मा की यात्रा थी, जो हमें भगवान शिव के और करीब ले आई।

यात्रा से मिले अद्‌भुत अनुभव और सीख

आस्था और संकल्प: यह यात्रा साबित करती है कि यदि श्रद्धा और संकल्प हो, तो कोई भी कठिनाई हमें रोक नहीं सकती।

प्रकृति की शक्ति: हिमालय की ऊँचाइयों और बर्फीली चोटियों को देखकर प्रकृति की भव्यता का एहसास हुआ।

शारीरिक और मानसिक धैर्य: इस यात्रा ने हमें सिखाया कि मानसिक धैर्य और शारीरिक मजबूती जरूरी है।

<u>यात्रा के लिए क्या तैयारी करनी चाहिए</u>

(i) स्वास्थ्य और फिटनेस

- चूँकि यात्रा अत्यधिक कठिन है, इसलिए शारीरिक रूप से स्वस्थ होना आवश्यक है।
- उच्च ऊँचाई पर ऑक्सीजन की कमी हो सकती है, इसलिए पहले से अभ्यास करना आवश्यक है।

(ii) आवश्यक सामग्री

- गर्म कपड़े, वाटरप्रूफ जैकेट और ऊँचाई पर चलने के लिए मजबूत ट्रैकिंग शूज।
- पर्याप्त भोजन, पानी और दवाइयाँ।
- टॉर्च, रेनकोट और ऊँचाई पर साँस लेने में मदद करने वाले उपकरण।